Vol 4 Issue 12 Sept2015
ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
ISSN 2249-894X

Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume - 4 | Issue - 12 | Sept - 2015

"नास्तिक दर्शनों में ईश्वर सम्बन्धी विचार"

विनय पटेल
शोधार्थी, अद्वैत वेदान्त दर्शन विभाग , अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश :

नास्तिक दर्शनों को नास्तिक इसलिये कहा जाता है कि ये ''वेद को प्रमाण के रूप में नहीं स्वीकार करते हैं'' और ये दर्शन प्रायः वैदिक सिद्धान्तों एवं दर्शन से दूर रहने का ही प्रयत्न करते हैं। परिणामतः ईश्वर विचार के विषय में भी वेदों और आस्तिक दर्शनों से मत में भिन्नता होना स्वाभाविक ही है। यद्यपि ईश्वर विचार के संदर्भ में तीनों नास्तिक दर्शनों अर्थात् चार्वाक, बौद्ध एवं जैन दर्शनों की विचारधारा प्रायः एक ही है और वह है– ईश्वर को मानने की आवश्यकता ही नहीं है।

मुख्य शब्द – नास्तिक, आस्तिक एवं ईश्वर विचार ।

प्रस्तावना :

सनातन काल से ही सभ्यता, संस्कृति एवं ज्ञान के विकास के साथ ईश्वर अथवा ईश्वरीय सत्ता की खोज एक गहन, गंभीर व गूढ़ दार्शनिक एवं धर्मशास्त्रीय विषय रहा है और विभिन्न विचार धाराओं के दार्शनिकों, विचारकों एवं विद्वानों ने समय–समय पर इस विषय में अपने मत अथवा सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं। इन सभी सिद्धान्तों एवं विचारधाराओं में ईश्वर के संबंध मे मूल दार्शनिक प्रश्न यह उठता है कि क्या ईश्वर की सत्ता है अथवा नहीं? इस प्रश्न के समाधान के लिये जब प्राच्य संस्कृति और समाज का, विशेष रूप से, वैदिक या प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं दर्शन का अवलोकन किया जाता है, तब यह पूर्ण रूपेण सिद्ध होता है कि ये संस्कृति ईश्वरवादी संस्कृति है और ये ईश्वर के अस्तित्व को न केवल स्वीकार करती है, अपितु उसके विशिष्ट स्वरूप को भी ये प्रतिपादन करती हैं। इसी प्रकार कुछ दार्शनिक सम्प्रदाय ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते है एवं उसके स्वरूप की व्याख्या भी करते हैं और कुछ ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार ही नहीं करते हैं।

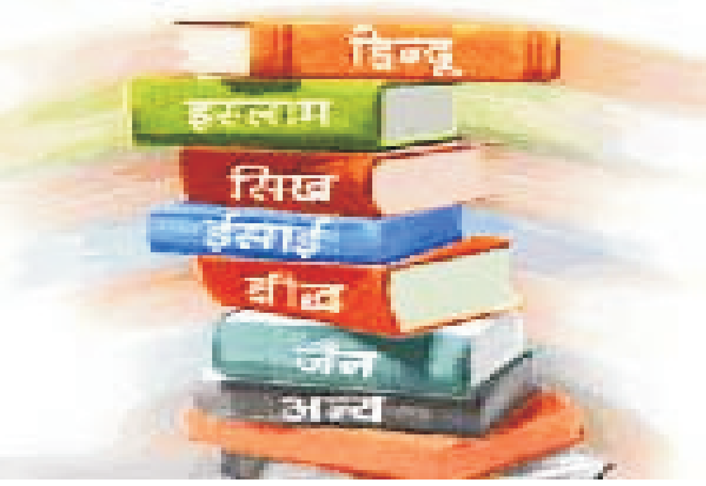

साथ ही यह विशेष रूप से ध्यातव्य है कि केवल प्राचीन भारतीय संस्कृति ही नहीं अपितु विश्व की अनेकानेक संस्कृतियाँ व सभ्यताएँ ईश्वरवादी थीं अथवा ये किसी न किसी रूप में ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करती थीं। किन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से मध्यकाल में और विशेष रूप से पुनर्जागरण काल में, जब भौतिक विज्ञान अपनी विकास की प्रारंभिक अवस्था में था और प्रयोगों का वर्चस्व था, तब एक ऐसा दौर भी आया कि ईश्वर को विज्ञानवादी दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी या प्रयोगवादी दृष्टिकोण से देखे जाने का प्रयत्न किया जाने लगा। जिसके परिणाम स्वरूप ईश्वर या ईश्वरीय सत्ता को भी प्रयोगों के माध्यम से सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया और वर्तमान समय में भी ईश्वरीय सत्ता के प्रति प्रायः यही दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। भौतिकवादी विज्ञान का यह सिद्धान्त है कि जो वस्तु या सत्ता प्रयोगों के द्वारा सिद्ध हो वहीं मान्य है और वही सत्य है। किन्तु ईश्वर या ईश्वरीय सत्ता को इस भौतिकवादी मत के आलोक में आज तक सिद्ध नहीं किया जा सका। अतः यह सिद्ध कर पाना कि ईश्वर है अथवा नहीं, अपने आप में एक जटिल कार्य है।

विश्लेषण –

यह माना जाता है कि कुछ पाश्चात्य दार्शनिकों और भारतीय दर्शन का मत है, कि ईश्वर का अस्तित्व है ही नहीं अथवा ईश्वर नाम की कोई वस्तु नहीं है, तब फिर कोई तर्क अथवा अनुसन्धान की बात रह नहीं जाती। किन्तु यदि ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया जाता है अथवा यह माना जाता है कि ईश्वर की सत्ता किसी न किसी रूप में है, तब ईश्वर कौन है? वह कहाँ है? उसका स्वरूप क्या है? ईश्वर के अस्तित्व को कैसे सिद्ध किया जा सकता है? ईश्वर एवं जीव का संबंध क्या है? इन प्रश्नों के साथ ही यह भी महत्वपूर्ण प्रश्न उठ खड़ा होता है कि क्या ईश्वर की अनुभूति की जा सकती है अथवा नहीं? यदि ईश्वर की अनुभूति होती है तो कैसे? ईश्वर की अनुभूति की अभिव्यक्ति किस प्रकार से की जा सकती है? ईश्वर का कर्तृत्व क्या है? आदि अनेकों प्रश्न उठ खड़े होते हैं। जिनके समाधान में प्रायः समस्त दार्शनिक

सम्प्रदाय तथा विविध धर्म एवं उनके आचार्य प्रारंभ से ही तत्परता से लगे हुये थे और आज भी उसी तत्परता से लगे हैं।

चार्वाक दर्शन में ईश्वर विचार–

आस्तिक दर्शनों में ईश्वर की सत्ता शब्द–प्रमाण एवं अनुमान प्रमाणों से सिद्ध मानी जाती है। श्रुति कहती है कि ब्रह्म इस संसार के जनन, स्थिति और लय का कारणभूत है। किन्तु श्रुति के प्रमाण्य को न मानने के कारण नास्तिक शिरोमणि चार्वाक ईश्वर की सत्ता को शब्द प्रमाण के आधार पर स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं है। नैयायिक ईश्वर का सद्भाव अनुमान के आधार पर मानते हैं। वे लौकिक दृष्टान्तों की सहायता से भी ईश्वर को स्वीकार करते हैं। यदि घड़ा कोई कार्य पदार्थ है तो उसका कर्ता कुम्भकार अवश्य ही विद्यमान है। यह जगत् भी कार्य है, अतः इसका भी कर्ता कोई न कोई अवश्य ही होगा। किन्तु चार्वाक अनुमान की भी प्रामाणिकता को नहीं स्वीकार करता है। अतः चार्वाक के मत में शब्द तथा अनुमान के असत्य होने से ईश्वर असिद्ध है और वे "ईश्वर, आत्मा, परलोक आदि को भी नहीं मानते हैं।" "स्वभाव से ही जगत् की विचित्रता की सृष्टि तथा स्वभाव से ही जगत् के लय की समस्या हल कर देने से चार्वाकों के लिये ईश्वर को मानने की आवश्यकता ही नहीं होती है।"

बौद्ध दर्शन में ईश्वर विचार –

बौद्ध दर्शन और उसके सिद्धान्तों में ईश्वर विचार की ओर दृष्टिपात् करने पर यह आभास होता है कि "चार्वाक और जैन दर्शन के साथ ही बौद्ध दर्शन के सिद्धान्तों का मूल आधार उपनिषद् या वेदान्त ही है।" वैदिक कर्मकाण्ड की दुरुहता, अकिंचित्करता, भव–प्रपंच के मूल में अविद्या का कारणत्व, कर्म–सिद्धान्त आदि सामान्य सिद्धान्त दोनों ही दर्शनों में पाये जाते हैं। वेदान्त और बौद्ध दर्शनों के सामान्य सिद्धान्तों में भले ही समानता हो किन्तु बौद्ध दर्शन के क्षणिकवाद, अनात्मता, विज्ञान एवं शून्य की वास्तविकता के सिद्धान्त वेद और वेदान्त के विरोधी थे, साथ ही बौद्ध दर्शन वेद की प्रामाणिकता का भी विरोधी था। अतः वेदों के ईश्वर संबंधी विचारों एवं मान्यताओं का विरोध स्वाभाविक ही था। परिणामस्वरूप बौद्ध दर्शन तथा ग्रन्थों में ईश्वर की सत्ता के विषय में विचार ही नहीं किया गया।

बौद्ध दर्शन का सिद्धान्त यह है कि संसार परिवर्तनशील तथा क्षणिक है। इस दर्शन के अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु अनित्य और क्षणभंगुर है, अतः यह ईश्वर की सत्ता को स्वीकार ही नहीं कर सकता था, जिसका गुण नित्य सत्, अनन्त, आनन्दस्वरूप एवं चैतन्य है। यह उल्लेख प्राप्त होता है कि बौद्ध दर्शन के प्रणेता गौतम बुद्ध से जब ईश्वर विषयक प्रश्न पूँछे जाते थे तो वे सदा मौन ही रहते थे। अतएव उनके ईश्वर संबंधी विचारों को भली–भाँति नहीं जाना जा सका और उनके ईश्वर संबंधी विचार रहस्य ही रहें। किन्तु सामान्य रूप से बौद्धों का मत है कि यदि ईश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में स्वीकार किया जाये तो उसमें वैषम्य की प्रसक्ति अपरिहार्य रूप से होगी, क्योंकि जगत् में कोई सुखी और कोई दुःखी है। ऐकान्तिक सुख की प्राप्ति कहीं नहीं दिखलायी पड़ती है। यदि कर्मों के अनुसार सुख–दुःख की प्राप्ति मानी जाये तो ईश्वर को सृष्टिकर्ता कहना व्यर्थ होगा। बुद्ध द्वारा ईश्वर की सत्ता को न स्वीकार करने या इस विषय में मौन रहने का कारण संभवतः यह था कि जगत् में जो कुछ दुःख प्रत्यक्ष दिखलायी पड़ते हैं, उसे दूर करने का उद्देश्य प्रधान होना चाहिये। ईश्वर आदि विषय तो परलोक से संबंधित हैं अतएव उन पर विचार करना व्यर्थ ही है। यह बात अलग है कि गौतम बुद्ध को ही, जो ईश्वर के विरोधी प्रतीत होते हैं, कालान्तर में ईश्वर के रूप में ही स्वीकार किये गये एवं बौद्धों के उपास्य बने। यहाँ तक कि हिन्दू धर्म के अन्तर्गत पुराणों में बुद्ध को भगवान् (विष्णु) का तेइसवां अवतार माना गया है।

जैन दर्शन में ईश्वर विचार –

तीसरे एवं अन्तिम नास्तिक दर्शन, जैन दर्शन में ईश्वर के विषय में किसी प्रकार के विचारों की प्राप्ति नहीं होती है। जैन दर्शन इस "जगत् के मूल में अनेक तत्त्वों की सत्ता को स्वीकार करता है। अतः वह दार्शनिक बहुत्ववाद के समर्थक के रूप में हमारे सम्मुख आता है। जैन दर्शन प्रारंभ से ही वास्तववाद का अनुयायी रहा है और वह हमारी बाह्येन्द्रिय तथा अन्तरेन्द्रिय के द्वारा अनुभूत जगत् की सत्ता को वास्तविक मानता है। इस दर्शन के अनुसार बाह्य जगत् की सत्यता प्रमाणित करने के लिये मन के साथ–साथ बाह्य इन्द्रियों की उपयोगिता भी किसी प्रकार से कम नहीं है। इस दृष्टि के अनुयायी होने के कारण वह "पाश्चात्य दार्शनिक लाइवनित्स के समान ही इस जगत् के समस्त प्रदेशों में जीवों की सत्ता को स्वीकार करता है।"

जैन मत (दर्शन) प्रारंभ में धर्म के रूप में विकसित हुआ था जबकि उसको क्रमबद्ध दार्शनिक स्वरूप कालान्तर में ही प्राप्त हुआ। इस कारण से दार्शनिकों एवं विचारकों ने आस्त्रव तथा संवर के मोक्षोपयोगी तत्त्वों का प्रतिपादन ही जैन दर्शन का प्रतिपाद्य विषय बतलाया है एवं अन्य सब बातें उसी की प्रपंचाभूत हैं। किन्तु जैन धर्म व दर्शन की एक महत्वपूर्ण त्रुटि सामने आती है और वह है– ईश्वर के विषय में विश्वास के साथ कुछ भी नहीं कह पाना।

जैन दर्शन में कर्म–

कर्मफल, मुक्ति या मोक्ष, आत्मा, जीव तथा द्रव्यों आदि के ऊपर पर्याप्त रूप से विचार किया गया है। इस दर्शन के अनुसार "आत्मा और कर्म का सम्बन्ध अनादि है। वह कर्मणात्मक कर्मों के साथ अनादि काल से बँधी हुई चली आ रही है।" जीव पुराने कर्मों का नाश करता हुआ नवीन कर्मों का उपार्जन करता रहता है। जब तक जीव के पूर्वोपार्जित समस्त कर्मों का नाश नहीं हो जाता और पुनः नये कर्मों का उपार्जन बन्द नहीं होता, तब तक उसकी मुक्ति संभव नहीं। इस प्रकार से हम पाते हैं कि जैन दर्शन में कर्म और कर्मफलों, मोक्ष आदि के ऊपर गंभीरतापूर्वक विचार किया गया है।

किन्तु यह दर्शन कर्मफल के प्रदाता के रूप में भी ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है। वह ईश्वर विषयक युक्तियों का तर्क के द्वारा खण्डन करता है तथा वह ईश्वर के निषेध करने में विशेष रूप से जागरूक बना हुआ है। कर्म की स्वतन्त्रता ईश्वर की अध्यक्षता के अभाव में भी तत्तत् फल देने में स्वयं कारण मानी जा सकती है। इस विषय में जैन दर्शन मीमांसा दर्शन के मत के साथ समानता रखता है। परन्तु जहाँ मीमांसा धर्म–कर्म के अन्तिम निर्णय के लिये श्रुति का आश्रय लेता है वहाँ पर जैन दर्शन उस आश्रय से वंचित हो जाता है, कारण

कि वह श्रुति को प्रमाण के रूप में स्वीकार ही नहीं करता।

इस सब के पश्चात् भी तीर्थांकरों अथवा सिद्धों को ईश्वर के स्थान पर प्रतिष्ठित कर जैन दर्शन ने अपनी ईश्वर संबंधी विचारों की न्यूनता को लगभग पर्याप्त रूप से कम किया है। 'अर्हत्' अथवा तीर्थंकरों के रूप में विशिष्ट पुरुषों की मान्यता के आधार पर यह सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि जैन दर्शन किचित् रूप से ईश्वर में विश्वास करता है। ''अर्हत् की देवत्व कल्पना मनुष्यों के आर्त हृदय को आश्वासन देने के लिये संजीवनी औषधि का काम करती है, किन्तु इससे भी बढ़कर है उसका जीव के नैसर्गिक अनन्त सामर्थ्य तथा अनन्त सौख्य में गंभीर विश्वास।''

निष्कर्ष –

उपरोक्त विचारों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि वर्तमान युग में ईश्वर के सम्बन्ध में कोई भी ऐसी मौलिक स्थापना नहीं हुई जो भारतीय दर्शन के द्वारा स्थापित तत्त्वचिन्तन पर फिर से विचार करने पर विवश कर दे।

संदर्भ –

1.डॉ. सच्चिदानन्द पाठक, प्रकाशकीय, भारतीय दर्शन, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ
2.डॉ. नन्दकिशोर देवराज, भारतीय दर्शन, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 6 संस्करण 2002, पृष्ठ 144
3.उपाध्याय, आचार्य बलदेव, भारतीय दर्शन, पृष्ठ 84, पुनर्मुद्रित संस्करण 2001, भाशरदा मन्दिर प्रकाशन, वाराणसी।
4.डॉ. राधाकृष्णन, इण्डियन फिलॉसफी, भाग–1, पृष्ठ 334.

विनय पटेल
शोधार्थी, अद्वैत वेदान्त दर्शन विभाग , अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org